बेकार कोशिश

जिंदगी भी अकसर इस सागर जैसी है,
कभी खामोश तो कभी आक्रोश में।
जैसे जिंदगी की उतार--चढ़ाव,
वैसे ही सागर की लहरों का उमड़ना।

शायद वह हमें कुछ सिखाते हैं,
हर बार उड़ने की मंज़िल में है।
पता है उसे बेकार है यह मेहनत, शायद
गिरकर उड़ने की सीख दे रही है।

कभी सागर के किनारे पर आ बैठकर,
अपनी दर्द को बयान करके देखा करो।
वह लहर सिखायेगी तुम्हें, कैसे -
सब को पीछे छुड़कर आगे बढ़ना है।

पर आज यह कुछ और ही चाह में है।
न जाने क्यों इतने आक्रोश में है?
उसकी लहरों में बदले की आग है।
जो शायद पूरी दुनिया को राह कर देगी।

शायद इस आक्रोश में उसका दर्द छुपा हुआ है,
छीना ही तो है हमने उससे उसका सबकुछ।
क्या पता अंदर-ही-अंदर जल रही हो, जो,
उमड़कर वह बाहर निकालना चाहती हो।

सारे पेड़ों को हमने काट डाला है,
नदियाँ को हमने सूखा कर दिया है,
मार दिया है हमने सारे प्रकृति को।
शायद इसकी बदला ले रही है हमसे।

बेकार कोशिश

अब बचा कुछ नहीं है उसके पास,
सिवाय दर्द और बर्बादी के किस्से के।
शायद, शायद इस बार उसकी कोशिश,
मंज़िल में तब्दील हो जायेगी ॥

तब बचा होगा न यह दुनिया,
न हम, न कुछ भी यहाँ।
वक्त अभी भी बाकी है पास,
उन लहरों को सबकुछ लौटाने की।

लौटा देते हैं उसे उसका सबकुछ,
थाम लेते हैं उस काँपती हाथ को।
वापस उस पुरानी वाली लहर से,
ज़िन्दगी की सीख सीखने को।

एक बार फिर हाथ जोड़ लेते हैं,
छीना हुआ सब लौटाने की कसम खाते हैं,
वापस गले लगाने दे उस लहर को ज़मीन से।
फिर अपनी बेकार कोशिश को आगे बढ़ने दो...।

बचपन से यही तो देखती आयी हूँ,
लेकिन कभी उस लहर पर तरस नहीं आती।
क्योंकि जानती हूँ मैं बेकार कोशिश ही,
मंज़िल तक हमें पहुँच सकते हैं ॥

लेकिन यह कोशिश बेकार ही रहने दो,
उसकी उमड़ने की मंज़िल की अंजाम-
हम शायद बुकड नहीं पाओगे।
बस उसे ऐसे ही कोशिश करने दो...।